



Neutral Citation No. - 2026:AHC:7511

इलाहाबाद उच्च न्यायालय

आपराधिक प्रकीर्ण जमानत आवेदन संख्या - 26450 वर्ष 2025

अवनीश कुमार

.....आवेदक (गण)

बनाम

उत्तर प्रदेश राज्य

.....विपक्षी (गण)

आवेदक (गण) की ओर से अधिवक्ता : हेमंत कुमार, विवेक सिंह

विपक्षी (गण की ओर से अधिवक्ता : जी.ए.

न्यायालय संख्या - 66

माननीय न्यायमूर्ति कृष्ण पहल

1. वाद-सूची की पुनः पुकार कराई गई है।
2. आवेदक के विद्वान अधिवक्ता श्री हेमंत कुमार तथा राज्य की ओर से विद्वान ए.शा.अधि. श्री सुनील कुमार को सुना गया एवं अभिलेख पर रखी गई सामग्री का अवलोकन किया गया।
3. आवेदक विचारण के लंबित रहने की अवधि में मामला अपराध संख्या 93वर्ष 2025, धाराएँ 103(1), 61(2) भा.न्या.स., थाना जोनी, जिला मेरठ में जमानत चाहता है।
4. आवेदक के विद्वान अधिवक्ता ने तर्क दिया है कि आवेदक का नाम प्रथम सूचना रिपोर्ट में नहीं है और उसे इस प्रकरण में झूठा फँसाया गया है। उसका नाम पहली बार एक सचिन के बयान में आया है, जिसने आवेदक और मृतक तथा अन्य सह-अभियुक्त व्यक्तियों को मद्यपान करते हुए देखा बताया जाता है और तत्पश्चात शव बरामद हुआ, परंतु आरोप स्वयमेव असत्य हैं।
5. आवेदक के विद्वान अधिवक्ता ने यह भी तर्क दिया है कि उक्त गवाह को 08.04.2025 को बाद में सम्मिलित किया गया है, जिसका विधि की दृष्टि में कोई साक्ष्यिक मूल्य नहीं



है। आवेदक का कोई आपराधिक इतिहास नहीं है। आवेदक 27.02.2025 से जेल में बंद है और वह विचारण में सहयोग करने को तैयार है। यदि आवेदक को जमानत पर रिहा किया जाता है तो वह जमानत की स्वतंत्रता का दुरुपयोग नहीं करेगा।

6. विद्वान ए.शा.अधि. ने जमानत आवेदन का घोर विरोध किया, परंतु आवेदक के विद्वान अधिवक्ता द्वारा उठाए गए तर्कों का खण्डन नहीं किया जा सका।
7. प्रकरण के तथ्यों एवं परिस्थितियों, पक्षकारों के विद्वान अधिवक्ताओं द्वारा किए गए निवेदनों तथा अभिलेख पर उपलब्ध साक्ष्यों पर विचार करते हुए एवं इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए कि उक्त गवाह सचिन को 08.04.2025 को बाद में सम्मिलित किया गया है, जिसका कोई साक्ष्यिक मूल्य नहीं है, तथा मामले के गुणावगुण पर कोई मत व्यक्त किए बिना, न्यायालय का प्रथमदृष्टया यह मत है कि आवेदक ने जमानत का मामला बनाया है। जमानत आवेदन **स्वीकृत** किया जाता है।
8. आवेदक **अवनीश कुमार**, जो उपरोक्त मामला अपराध में संलिप्त है, को संबंधित न्यायालय की संतुष्टि के अनुसार व्यक्तिगत मुचलका तथा उसी राशि की दो जमानतें प्रस्तुत करने पर निम्नलिखित शर्तों के अधीन जमानत पर रिहा किया जाए। इसके अतिरिक्त, रिहाई आदेश जारी करने से पूर्व जमानतों का सत्यापन किया जाए।
 - (i) आवेदक विचारण के दौरान साक्ष्यों के साथ छेड़छाड़ नहीं करेगा।
 - (ii) आवेदक अभियोजन साक्षियों को दबाएगा/डराएगा नहीं।
 - (iii) आवेदक निर्धारित तिथि पर विचारण न्यायालय के समक्ष उपस्थित होगा।
9. उपरोक्त शर्तों में से किसी का भी उल्लंघन जमानत निरस्त किए जाने का आधार होगा।
10. यह स्पष्ट किया जाता है कि आवेदक को जमानत प्रदान करने में की गई टिप्पणियाँ किसी भी प्रकार से विद्वान विचारण न्यायाधीश को साक्षियों की गवाही के आधार पर अपनी स्वतंत्र राय बनाने में प्रभावित नहीं करेंगी।

(न्यायमूर्ति कृष्ण पहल)

12 जनवरी 2026

(रवि कांत)